पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु बंधसामित्तं

‘आहारसरीर-आहारअंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो ? ।। १३३ ।’

‘सुगमं ।’

‘अप्पमत्तसंजदा अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्व-करणध्दाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।। १३४ ।’

‘सुगमं ।’

‘तित्थयरणामाए को बंधो को अबंधो ? ।। १३५ ।’

‘सुगमं ।’

‘असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणध्दाए संखेज्जे भागे गंतूण बन्धो वोच्छिज्जदि । एदे बन्धा, अवसेसा अबन्धा ।। १३६ ।’

‘आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मोका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ।। १३३ ।’

< यह सूत्र सुगम है ।>

‘अप्रमत्तसंयत और अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । अपूर्व-करणकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेंष अबन्धक हैं ।। १३४ ।’

< यह सूत्र सुगम है ।>

‘तीर्थकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ।। १३५ ।’

< यह सूत्र सुगम है ।>

‘असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरणकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ।। १३६ ।’

ʿएदं पि सुगमं ।]

ʿकायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-वणप्फदिकाइय-णिगोद-जीव-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-पज्जत्तापज्जत्ताणं तसकाइयअपज्जत्ताणं च पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त-भंगो ।। १३७ ।]

ʿएदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थाणं परुवणा कीरदे---तत्थ ताव पुढविकाइयाणं भण्णमाणे पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-एइंदिय-बीइं-दिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरा-लियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गन्ध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुजोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ पुढविकाइएहि बज्झमाणाओ ठवेदव्वा । एत्थ बन्धोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, तदुभयवोच्छेदाभावादो ।]

< यह सूत्र भी सुगम है ।>

ʿकायमार्गणानुसार पृथिवीकायिक, अप्कायिक, वनस्पतिकायिक और निगोद जीव बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त तथा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त तथा त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंकी परुवणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ।। १३७ ।]

< यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, अत एव इससे सूचित अर्थोकी प्ररुपणा करते हैं-उनमें पहिले पृथिवीकायिक जीवोंकी प्ररुपणा करते समय पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श तिर्यग्गति व मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात उच्छ्वास आताप, उद्योत दो विहायोगतिया त्रस स्थावर बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, स्थिर,

अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय यशकीर्ति, अयशकीर्ति निर्माण, नीचगोत्र, ऊंचगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियां पृथिवीकायिक जीवों द्वारा बध्यमान स्थापित करना चाहिये । यहां बन्ध और उदयके व्युच्छेदका विचार नहीं है, क्योंकि, दोनोंके व्युच्छेदका यहां अभाव है ।>

पुढविकाइयादिसु बंधसामित्तं

‘पंचणाणावरणीय चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णउंसयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गन्ध-रस-फास-अगुरुअलहुअ थावर-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-अणादेज्ज-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बन्धो, एत्थ एदासिं धुवोदयत्तादो । इत्थिपुरिसवेद-मणुस्साउ-मणुस्सगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियपंचिंदियजादि-पंचसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-साहारण-दोविहायगइ-तस-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं परोदओ बन्धो, एदासिमेत्थ उदयविरोहादो । पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-छण्णोकसाय-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सोदय-परोदओ बन्धो, अध्दुवोदयत्तादो। ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाद-पत्तेयसरीर-आदावुज्जोवाणं पि सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए उदयाभावादो अध्दुवोदयत्तादो च । परघादुस्सासाणं पि सोदय-परोदओ, बन्धो, एदासिमुदयाणुदयसहिदपज्जत्तापज्जत्तध्दासु बन्धदंसणादो । तिरिक्खगइपाओ-ग्गाणुपुव्वीए सोदय-परोदओ बन्धो, सोदयाणुदयविग्गहाविग्गहगदीसु बंधुवलंभादो ।

‘पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणु-

----

< पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु स्थावर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग अनादेय, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये प्रकृतियां ध्रुवोदयी है । स्त्रीवेद, पुरुषवेद मनुष्यायु, मनुष्यगति द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, पांच संस्थान औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, साधारणशरीर, दो विहायोगतियां, त्रस, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय

और उच्चगोत्र, इनका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि यहां इनके उदयका विरोध है । पांच दर्शनावरणीय साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, छह नोकषाय, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी हैं । औदारिकशरीर हुण्डसंस्थान उपघात प्रत्येकशरीर, आताप और उद्योतका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता हैं, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है तथा ये अध्रुवोदयी भीहैं । परघात और उच्छ्वासका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, क्रमश: इनके उदय और अनुदय सहित पर्याप्त व अपर्याप्त कालोंमें उनका बन्ध देखा जाता हैं । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है क्योंकि, क्रमश: अपने उदय व अनुदय सहित विग्रह व अविग्रह गतियोंमें उसका बन्ध पाया जाता है । >

< पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा >

ʽस्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गंध-रस फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बन्धो, एगसमएण बन्धुवरमाभावादो धुवबन्धित्तादो च । सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग--दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बन्धो, एगसमएण बन्धुवरमदंसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचा-गोदाणं सांतर-णिरंतरो । कधं-णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउकाइएहिंतो पुढविकाइएसुप्पण्णाणं णिरंतरबन्धुवलंभादो । परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त पत्तेयसरीराणं पि सांतर-णिरंतरो बन्धो । कधं णिरंतरो ? ण, देवाणं पुढविकाइएसुप्पण्णाणं मुहुत्तस्संते णिरंतर-बन्धुवलंभादो ।ʼ

ʽएदेसिं पच्चया एइंदियपच्चएहि समा । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-

----

< तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके

बन्धविश्रामका अभाव है तथा ये ध्रुवबन्धी भी हैं। साता व असाता वेदनीय, सात नोकषाय, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगति-प्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां त्रस, स्थावर सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अपयशकीर्ति और उच्चगोत्रका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है । तिर्यगति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ? >

ʿशंका--< निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? >

ʿसमाधान--< यह ठीक नहीं, क्योंकि, तेज व वायु कायिकोंमेंसे पृथिवीकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है । >

< परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका भी सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है । >

ʿशंका--< निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? >

ʿसमाधान--< यह ठीक नहीं क्योंकि पृथिवीकायिकोमें उत्पन्न हुए देवोंके अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है । >

< इन प्रकृतियोंके प्रत्यय एकेन्द्रियप्रत्ययोंके समान हैं । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, >

पुढविकाइयादिसु बंधसामित्तं

ʿतीइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहा-रणसरीराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति। मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । सेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं । तिरिक्खा सामी । बन्धध्दाणं सुगमं । एत्थ बन्धवोच्छेदो णत्थि । धुवबन्धीणं चउ-व्विहो बन्धो । सेसाणं सादि अध्दुवो ।

ʿबादरपुढविकाइयाणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि बादरस्स सोदएण बन्धो, सुहुमस्स परोदएण । बादरपुढविकाइयपज्जत्ताणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बन्धो । बादरपुढविकाइयअपज्जत्ताणं पि बादरपुढवि-काइयभंगो । णवरि पज्जत्त-थीणगिध्दितिय

परघादुस्सास-आदावुज्जोव-जसकित्तीणं परोदओ, अपज्जत्त-अजसकित्तीणं सोदओ बन्धो । परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण सांतरो बन्धो, अपज्जत्तएसु देवाणमुववादाभावादो । पच्चया सत्तत्तीस, ओरालियकायजोगपच्चयस्साभावादो ।

सुहुमपुढविकाइयाणं पुढविकाइयमंगो, णवरि बादर-आदावुज्जोव-जसकित्तीणं परो-दओ, सुहुम-अजसकित्तीणं सोदओ बंधो । परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतरो

< एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीर इनको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतियोंको मनुष्य व तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं । तिर्यंच स्वामी हैं । बंधाध्वान सुगम है । यहां बन्धव्युच्छेद है नहीं । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है । >

< बादर पृथिवीकायिकोंकी भी इसी प्रकार प्ररुपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि बादरका स्वोदय और सूक्ष्मका परोदयसे बन्ध होता है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार प्ररुपणा करना चाहिये । विशेषता इतनी है कि पर्याप्तका स्वोदय और अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता हैं । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंकी भी प्ररुपणा बादर पृथिवीकायिकोंके समान है । विशेषता यह है कि पर्याप्त, स्त्यान-गृध्दित्रय, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत और यशकीर्तिका परोदय; तथा अपर्याप्त और अयशकीर्तिका स्वोदय बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सान्तर बन्ध होता हैं, क्योंकि, अपर्याप्तोंमें देवोंकी उत्पत्ति नहीं होती । प्रत्यय सैंत्तीस होते हैं क्योंकि, उनके औदारिककाययोग प्रत्ययका अभाव है । >

< सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंकी प्ररुपणा पृथिवीकायिकोंके समान है । विशेष यह हैं कि बादर, आताप, उद्योत और यशकीर्तिका परोदय; तथा सूक्ष्म और अयशकीर्तिका स्वोदय बन्ध होता हैं । परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सान्तर >

ʿबन्धो, सुहुमेइंदिएसु देवाणमुववादाभावादो । णिरंतरबन्धाभावा । सुहुमपुढविकाइय-पज्जराणमेव चेव वत्तव्वं । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बन्धो । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ताणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि अपज्जत्तस्स सोदओ, पज्जत्त-थीणगिध्दितिय-परघादुस्सासाणं परोदओ बन्धो । सव्वआउकाइयाणं जहापच्चासण्ण-पुढविकाइयभंगो । णवरि आदावस्स परोदओ बन्धो, पुढविकाइए मोत्तूण अण्णत्थ आदावस्सुदयाभावादो ɹ

ʿपंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणो-कसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-पंचजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइय-सरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्णचउक्क-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुवचउक्क आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ ठविय वणप्फदिकाइयाणं परुवणा कीरदे-बन्धोदयाणं पुव्वापुव्वकालगयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, बन्धोदयाणमेत्थ वोच्छेदाभावादो ɹ

< बन्ध होता है, क्योंकि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें देवोंकी उत्पत्ति न होनेसे वहां निरन्तर बन्धका अभाव है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी इसी प्रकार ही प्ररुपणा करना चाहिये । विशेषता इतनी है कि पर्याप्तका स्वोदय और अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार ही प्ररुपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि अपर्याप्तका स्वोदय और पर्याप्त, स्त्यानगृध्दित्रय, परघात व उच्छ्वासका परोदय बन्ध होता है । सब अप्कायिक जीवोंकी प्ररुपणा अपनी अपनी प्रत्यासत्तिके अनुसार पृथिवीकायिकोंके समान है । विशेषता यह है कि आतापका परोदय बन्ध होता है क्योंकि, पृथिवीकायिकोंको छोडकर अन्यत्र आताप कर्मका उदय नहीं होता । >

< पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय तिर्यगायु मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, पांच जातियां औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्णादिक चार,

तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुरुलघु आदिक चार, अताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर आदेय, अनादेय यशकीर्ति अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोंत्र, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंको स्थापित कर वनस्पतिकायिकोंकी प्ररुपणा करते हैं --- बन्ध और उदयके पूर्व व अपूर्व कालगत व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है ।>

पुढविकाइयादिसु बंधसामित्त

ʻपंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्ख-गइ-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-थावर-थिराथिर-सुहा-सुह दुभग-अणादेज्ज-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बन्धो, अत्थगईए धुवो-दयत्तादो । इत्थिपुरिसवेद-मणुसाउ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-पंच-संठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदाव दोविहायगइ-तस-सुभग-सुस्सर-दुस्सर- आदेज्जुच्चागोदाणं परोदओ बन्धो । पंचदंसणावरणीय-सादा-साद सोलसकसाय-छण्णोकसाय-हुंडसंठाण- ओरालियसरीर-तिरिक्खाणुपुव्वी-उवघाद-परघादुस्सासुज्जोव-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर जसकित्ति-अजस-कित्तीणं सोदय-परोदओ बन्धो ॽ

ʻपंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुसाउ-ओरालिय तेजा- कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बन्धो । सादासाद-सत्तणोकसाय- मणुस्सगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघ-डण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-दोविहायगदि-तस-थावर-सुहुम-अप-ज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज

< पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु तिर्य-ग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार अगुरुलघु, स्थावर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, निर्माण नीचगोत्र और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि

वास्तवमें ये प्रकृतियां ध्रुवोदयी हैं । स्त्रीवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, पांच संस्थान, औदारिक-शरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप दो विहायोगतियां, त्रस, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र इनका परोदय बन्ध होता है । पांच, दर्शनावरणीय साता व असाता वेदनीय सोलह कषाय, छह नोकषाय, हुंडसंस्थान, औदारिक-शरीर, तिर्यगानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास उद्योत बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक-शरीर साधारणशरीर, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका स्वोदयपरोदय बंध होता है ।>

< पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरण मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है । साता व असाता वेदनीय, सात नोकषाय-मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहा-योगतियां त्रस, स्थावर सूक्ष्म अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका >

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

‘जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बन्धो, एगसमएण बन्धुवरमुवलंभादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो । कुदो ? तेउ-वाउकाइएहिंतो वणप्फदिकाइएसुप्पण्णाणं मुहुत्तस्संतो णिरंतरबन्धुवलंभादो । परघा-दुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतर-णिरंतरो बन्धो । कधं णिरंतरो ? ण, देवे-हिंतो वणप्फदिकाइएसुप्पणाणं मुहुत्तस्संतो णिरंतर-बन्धुवलंभादो । पच्चया सुगमा । गइसंजुत्तादिउवरिमेइंदियपरुवणाएतुल्ला ।’

‘एवं बादरवणप्फदिकाइयाणं वत्तव्वं । णवरि बादरस्स सोदओ बन्धो, सुहुमस्स परोदओ । बादर-पज्जत्ताणं बादरवणप्फदिभंगो । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो । बादरवणप्फदिअपज्जत्ताणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । सुहुमवण-प्फदिपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तभंगो । तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्तभंगो । णवरि बीइंदिय-

तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाण सोदय-परोदओ बन्धो । णिगोदजीवाणं तस--- बादर---सुहुम----
-,

< सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनका एक समयसे बन्धविश्राम पाया जाता है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेज व वायु कायिकोमेंसे वनस्पतिकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके इनका अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है । परघात, उच्छ्वास बादर, पर्याप्त ओर प्रत्येकशरीरका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है । >

ʿशंका-< निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? >

ʿसमाधान-< यह ठीक नहीं, क्योंकि, देवोंमेंसे वनस्पतिकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।>

< प्रत्यय सुगम हैं । गतिसंयुक्तता आदि उपरिम प्ररुपणा एकेन्द्रिय प्ररुपणाके समान है । >

< इसी प्रकार बादर वनस्पतिकायिकोंके कहना चाहिये । विशेषता केवल इतनी है कि बादरका स्वोदय बन्ध होता है और सूक्ष्मका परोदय । बादर वनस्पति-कायिक पर्याप्तोंकी प्ररुपणा बादर वनस्पतिकायिकोंके समान है । विशेषता यह है कि पर्याप्तका स्वोदय और अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंकी प्ररुपणा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी प्ररुपणा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्तोंके समान है । त्रस अपर्याप्तोंकी प्ररुपणा पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोके समान है । विशेषता यह हैं कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । >

तेउ-वाउकाइएसु बंधसामित्तं

ʿपज्जत्तापज्जत्ताणं वणप्फदिकाइयभंगो । णवरि पत्तेयसरीरस्स परोदओ सांतरो बंधो । तस बादर-पज्जत्त-परघादुस्सासाणं बन्धो सांतरो । साहारणसरीरस्स सोदय-परोदओ । बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तापज्जत्ताणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि साहा-रणसरीरस्स परोदओ बन्धो, पत्तेयसरीरस्स सोदय-परोदओ बन्धो ।

ʿतेउकाइय-वाउकाइय-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं सो चेव भंगो । णवरि विसेसो मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गापुव्वी----उच्चागोदं णत्थि ।। १३८ ।।

ʿएदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थपरुवणा कीरदे----परघादुस्सास बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतरो बन्धो, देवाणं तेउ-वाउकाइएसु उववादाभावादो । तिरिक्खगइ---तिरिक्खाणुपुव्वी---णीचागोदाणं णिरंतरो बन्धो सोदओ चेव । णवरि तिरिक्खाणुपुव्वीए बन्धो सोदय----परोदओ । आदाउज्जो-वाणं परोदओ बन्धो । होदु णाम वाउकाइएसु आदावुज्जोवाण--

----

< बादर, सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्तजीवों सहित निगोद जीवोंकी प्ररुपणा वनस्पतिकायिकोंकें समान हैं । विशेष यह हैं कि प्रत्येकशरीरका परोदय व सान्तर बन्ध होता है । त्रस, बादर, पर्याप्त, परघात और उच्छ्वासका सान्तर बन्ध होता है। साधारणशरीरका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त व अपर्याप्तोंके भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये । विशेषता यह है कि साधारणशरीरका परोदय बन्ध होता है । प्रत्येकशरीरका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । >

ʿतेजकायिक और वाउकायिक बादर सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी प्ररुपणा भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है । विशेषता केवल यह कि मनुष्यायु, मनुष्य-गति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र प्रकृतियां इनके नहीं है ।।१३८ ।।

< यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, इसीलिये इससे सूचित अर्थोकी प्ररुपणा करते हैं----परघात, उच्छ्वास, बादर पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, देवोंकी तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें उत्पत्ति नहीं होती । तिर्यग्गति, तिर्यगानु-पूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध निरन्तर व स्वोदय ही होता है । विशेषता यह है कि तिर्यगानुपूर्वीका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है । आताप और उद्योतका परोदय बन्ध होता है । >

ʿशंका-< वायुकायिक जीवोंमें आताप और उद्योतका अभाव भले ही हो, क्योंकि, >

ʻमुदयाभावो, तत्थ तदणुवलंभादो । ण तेउकाइएसु तदभावो, पच्चक्खेणुवलंभमाण-त्तादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे-ण ताव तेउकाइएसु आदाओ अत्थि, उण्हप्प-हाए तत्थाभावादो । तेउम्हि वि उण्हत्तमुवलंभइ चे ? उवलब्भउ णाम ण तस्स आदावववएसो, किंतु तेजसण्णा; "मूलोष्णवती प्रभा तेज:, सर्वांगव्याप्युष्णवती प्रभा आताप:, उष्णरहिता प्रमोद्योत:" (१ मूलुण्हपहा अग्गी आदाओ होदि उण्हसहियपहा । आइच्चे तेरिच्छे उण्हूणपहा हु उज्जोवो । गो.क.३३.), इति तिण्हं भेदोवलंभादो । तम्हा ण उज्जोवो वि तत्थत्थि, मूलुण्हुज्जोवस्स तेजवदसादो । एत्तिओ चेव भेदो, ण अण्णत्थ कत्थ वि । णवरि सव्वासिं पयडीणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बन्धो ।

ʻतसकाइय-तसकाइयपज्जत्ताणमोघं णेदव्वं जाव तित्थयरे त्ति ।। १३९ ।।

ʻएदं देसामासियमप्पणासुत्तं, तेणेदेण सूइदत्थपरुवणा कीरदे-बीइंदिय-तीइंदिय-

----

< उनमें वह पाया नहीं जाता । किन्तु तेजकायिक जीवोंमें उन दोनोंका उदयाभाव सम्भव नहीं हैं, कयोंकि, यहां उनका उदय प्रत्यक्षसे देखा जाता है । >

ʻसमाधान- < यहां उक्त शंकाका परिहार कहते हैं --- तेजस्कायिक जीवोंमें आताप नहीं है, क्योंकि, उसमें उष्ण प्रभाका अभाव है । >

ʻशंका- < तेजमें भी तो उष्णता पायी जाती है ? >

ʻसमाधान- < भले ही पाई जाओ परन्तु उसका नाम आताप नहीं है किन्तु 'तेज' संज्ञा है क्योंकि, मूलमें उष्णवती प्रभाका नाम तेज, सर्वांगव्यापी उष्णवती प्रभाका नाम आताप और उष्णता रहित प्रभाका नाम उद्योत है, इस प्रकार तीनों भेद पाया जाता है । >

< इसी कारण वहां उद्योत भी नहीं है, क्योंकि, मूलमें उष्ण उद्योतका नाम तेज है । इनमें केवल इतना ही भेद हैं, और कहीं भी कुछ भेद नहीं है । विशेष इतना हैं कि सब प्रकृतियोंका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । >

ʻत्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तोंके तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान कथन करना चाहिये ।। १३९ ।।

< यह देशामर्शक अर्पणासूत्र है, इसलिये इससे सूचित होनेवाली अर्थकी प्ररुपणा करते
>

***जोगमग्गणाए बंधसामित्तं

ʻचउरिंदिय-पंचिंदियाणं सोदय-परोदओ बन्धो । तस-बादराणं सोदओ चेव । एइंदिय-थावर-सुहुम-साहारणादावाणं परोदओ चेव बन्धो । अवसेसाणं पंचिदिय-पंचिंदिय-पज्जत्ताणं उत्त विहाणेण वत्तव्वं ⅃

ʻजोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-कायजोगेसु ओघं णेयव्वं जाव तित्थयरेत्ति ।। १४० ।⅃

ʻओघम्मि उत्तसत्तारसण्हं सुत्ताणमत्थो ससुत्तो एत्थ णिरवयवो, वत्तव्वो, भेदाभावादो । णवरि पच्चयगदो भेदो अत्थि तं परुवेमो-मणजोगे णिरुध्दे छाएत्तालीस एक्केत्तालीस सत्ततीस सत्ततीस बत्तीस उणवीस सत्तारस सत्तारस एक्कारस दस णव अट्ठ सत्त छ पंच पंच चत्तारि चत्तारि दोण्णि मिच्छा इट्ठिप्पहुडिसव्वगणट्ठाणाणं जहाकमेण एदे पच्चया होंति । अण्णो वि विसेसो मणजोगे णिरुध्दे संते अत्थि---चदुजादि---चत्तारिआणुपुव्वी--आदाव--थावर--सुहुम--अपज्जत्त--साहारणाणं परोदएण (१ मण-वयणसत्तये ण हि ताविमिविगलं च थावराणुचओ ।। गो.क.३१०.) उवघाद--परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेय--सरीर-पंचिंदियजादीणं सोदएण बंधो त्ति वत्तव्वं । एवं चेव चदुण्हं मणजोगाणं परुवणा⅂

< हैं---द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । त्रस और बादरका स्वोदय ही बन्ध होता है । एकेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण और आतापका परोदय ही बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंके पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्ररुपणा कही गई विधिके अनुसार कहनी चाहिये । >

ʻयोगमार्गणानुसार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी और काययोगियोंमें तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान जानना चाहिये ।। १४० ।⅃

< ओघमें कहे हुए (५ वें सूत्रसे ३८ में सूत्र तक १७ + १७ = ३४) सूत्रोंका अर्थ ससूत्र यहां संपूर्ण कहना चाहिये, क्योंकि, ओघसे यहां विशेषताका अभाव है । विशेष यह है कि प्रत्यगत

जो भेद उसे यहां कहते हैं-- मनोयोगके निरुध्द होने अर्थात् उसके आश्रित व्याख्यान करनेपर छ्यालीस, इकतालीस, सैतीस, सैंतीस बत्तीस, उन्नीस, सत्तरह सत्तरह, ग्यारह, दश, नौ आठ सात, छह, पांच, पांच चार, चार और दो, इस प्रकार ये क्रमसे मिथ्यादृष्टि आदि सब गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रत्यय होते हैं । मनोयोगके विवक्षित होनेपर और भी विशेषता है---चार जातियां, चार आनुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनका परोदयसे तथा उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और पंचेन्द्रिय जातिका स्वोदयसे बन्ध होता है, ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकार ही चार मनोयोगोंकी प्ररुपणा करनी चाहिये ।>

ʿकायव्वा । णवरि एक्कम्हि मणजोगे णिरुध्दे अवसेससव्वजोगा मूलोधुत्तरपच्चएसु अवणेदव्वा । अवसेसा णिरुध्दमणजोगीणं पच्चया होंति । णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि विसेसो ⁊

ʿवचिजोगीणमेवं चेव वत्तव्वं, सांतर-णिरंतरो सोदय-परोदय-सामित्तपच्चया-दीहि मणजोगीहिंतो वचिजोगीणं भेदाभावादो । णवरि बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं सोदय-परोदओ बन्धो त्ति वत्तव्वं । असच्च-मोसवचिजोगीणं वचिजोगी-भंगो । णवरि गुणट्ठाणाणं उत्तरपच्चएसु असच्च-मोसवचिजोगं मोत्तूण सेससव्वजोगा अवणेदव्वा । सच्च-मोस सच्चमोस-वचिजोगीणं सच्च-मोस-सच्चमोसमणजोगि-भंगो, विसेसाभावादो ⁊

ʿकायजोगीणं पि ओघभंगो चेव । णवरि सव्वगुणट्ठाणाणमोघपच्चएसु मण-वचि-जोगट्ठपच्चया अवणेदव्वा । सजोगिपच्चएसु दोद्दोमण-वचिजोगपच्चया अवणेदव्वा । णत्थि अण्णत्थ विसेसो । ओघम्मि वुत्तसत्तारससुत्तेसु चउत्थसुत्तम्मि भेदपदु---प्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

सादावेद्णीयस्स को बंधो को अबंधो ? मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । ऐदे बंधा , अबंधा णत्थि ।। १४१ ।।

< विशेषता यह है कि एक मनोयोगके विवक्षित होनेपर शेष सब योगोंको मूलोघ तथा उत्तर प्रत्यययोंमेंसे कम करना चाहिये । इस प्रकार शेष रहे विवक्षित मनोयोगियोंके प्रत्यय होते हैं । अन्यत्र और कहीं विशेषता नहीं है ।>

< वचनयोगियोके भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये, क्योंकि, सान्तर-निरन्तर, स्वोदय-परोदय, स्वामित्व और प्रत्ययादिकोंकी अपेक्षा मनोयोगियोंसे वचनयोगियोंके कोई भेद नहीं है । विशेष इतना है कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जातिका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, ऐसा कहना चाहिये । असत्यमृषावचनयोगियोंकी प्ररुपणा वचनयोगियोंके समान है । विशेषता यह है कि सब गुणस्थानोंके उत्तर प्रत्ययोंमेंसे असत्यमृषावचनयोगको छोडकर शेष सब योंगको कम करना चाहिये । सत्य, मृषा और सत्यमृषा वचनयोगियोंकी प्ररुपणा सत्य, मृषा और सत्यमृषा मन योगियोंके समान है, क्योंकि, कोई विशेषता नहीं है । >

< काययोगियोंकी भी प्ररुपणा ओघके समान ही है । विशेष इतना है कि सब गुणस्थानोंके ओघ प्रत्ययोंमेंसे चार मनोयोग और चार वचनयोग, इस प्रकार आठ प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । अन्यत्र विशेषता नहीं है । ओघमें उक्त सत्तरह सूत्रोंमेसे चतुर्थ सूत्रमें भेद प्ररुपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं--- >

ʿसाता वेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तब बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ।। १४१ ।।

जोगमग्गणाए बंधसामित्तं

ʿओघम्मि अवसेसा अबन्धा त्ति उत्तं । एत्थ पुण 'अबन्धा णत्थि' त्ति वत्तव्वं, जोगप्पणादो । ण च सजोगेसु अजोगा होंति, विप्पडिसेहादो । जदि एत्तियमेत्तो चेव भेदो तो एत्तियस्सेव णिद्देसो किण्ण कदो ? ण एस दोसो, एदस्स सुत्तस्स एदम्हि उद्देसेविसेसो अत्थि त्ति थूलबुध्दीण्णं पि सुहग्गहणट्ठं तधोवदेसादो ।

ʿओरालियकायजोगीणं मणुसगइभंगो ।। १४२ ।।

ʿपंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं बन्धोदयवोच्छेदे मणुसगदीदो णत्थि विसेसो, विसेसकारणाभावादो । जसकित्ति-उच्चागोदेसु विसेसो अत्थि, तेसिमेत्थुदयवोच्छेदाभावादो । मणुसगदीए पुण उदयवोच्छेदो अत्थि, अजोगि-चरिमसमए मणुसगदीए सह एदासिमुदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदय-सांतर-णिरंतरपरिक्खासु णत्थि भेदो, भेदकारणाणुवलंभादो । पच्चएसु अत्थि भेदो, ओरालियमिस्स-कम्मइय-वेउव्वियदुग-चदुमणवचिपच्चएहि विणा मिच्छाइट्ठिम्हि सासणे च जहाकमेण तेदालीस--अट्ठत्तीसपच्चयदंसणादो,

----

< ओघमें ‘अवशेष अबन्ध है’ ऐसा कहा गया है । परन्तु यहां ‘अबन्धक नहीं है’ ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, यहां योगकी प्रधानता है । और सयोगियोंमें अयोगी होते नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है । >

‘शंका-< यदि केवल इतनी मात्र ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों नहीं किया ? >

‘समाधान-< यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि इस सूत्रका इस उद्देशमें विशेष हैं, इसलिये स्थूलबुध्दि शिष्योंकेभी सुखपूर्वक ग्रहण करने केलिये उस प्रकारका उपदेश किया गया है । >

‘औदारिककाययोगियोंको प्ररुपणा मनुष्यगतिके समान है ।। १४२ ।।

< पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदमें मनुष्यगतिसे कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, विशेष कारणोंका यहां अभाव है । मात्र यशकीर्ति और उच्चगोत्रमें विशेषता है, क्योंकि, यहां उनके उदयके व्युच्छेदका अभाव है । परन्तु मनुष्यगतिमें इनका उदयव्युच्छेद है, क्योंकि, अयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उदयव्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय-परोदय और सान्तर-निरन्तर बन्ध की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, यहां विशेषताके उत्पादक कारणोंका अभाव है । प्रत्ययोंमें विशेषता है, क्योंकि औदारिक-मिश्र, कार्मण, वैक्रियिकद्विक चार मनोयोग और चार वचनयोग प्रत्ययोंके विना मिथ्या-दृष्टि और सासादन गुणस्थानमें यथाक्रमसे तेतालीस और अडतीस प्रत्यय देखे जाते हैं, >

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

‘सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु चोत्तीसपच्चयदंसणादो, उवरिमगुणट्ठाणपच्च-एसु वि ओरालियकायजोगं मोत्तूण सेसजोगपच्चयाणमभावादो । उवरिमपरिक्खासु वि णत्थि विसेसो । णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि- असंदजसम्मा-इट्ठि-संजदासंजदा-तिरिक्खगइ-मणुसगइमहिट्ठिदा सामि त्ति वत्तव्वं । एसो पढमसुत्त-ट्ठियभेदो । एत्थ उत्तपच्चय-गइगयसामित्तभेओ सव्वसुत्तेसु दट्ठव्वो । णवरि बिट्ठाणि-यपयडीसु तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं बन्धो मणु-सगईए परोदओ, एत्थ पुण सोदय-परोदओ त्ति

वत्तव्वं । णवरि तिरिक्खगइपाओग्गा-णपुव्वीए परोदओ चेव बंधो, ओरालियकायजोगे तिस्से उदयाभावादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खाणुपुव्वीणं मणुसगईए सांतरो बन्धो, एत्थ पुण सांतर-णिरतरो एवं चेव णीचागो-दस्स वि वत्तव्वं । मणुसाउ- मणुसगईणं मणुसगईए सोदओ बंधो, एत्थ पुण सोदय-परोदओ ओरालियसरीरअंगोवंग-मणुसगइ ? मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर णिरंतरो मणु-सगईए बंधो, एत्थ पुण सांतरो । मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीए मणुसगईए सोदय-परोदओ-एत्थ पुण परोदओ । ओरालियसरीरस्स मणुसगईए सोदय परोदओ बन्धो, एत्थ पुण सोदओ । ओरालियसरीरस्स मणुसगईए सांतर-णिरंतरो, एत्थ वि सांतर-णिरंतरो

< सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चौंतीस प्रत्यय देखे जाते हैं, तथा उपरिम गुणस्थान प्रत्ययोंमें भी औदारिककाययोगको छोडकर शेष योग प्रत्ययोंका अभाव है । उपरिम परीक्षाओंमें भी कोई विशेषता नहीं है । केवल इतना विशेष है कि मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यग्गति व मनुष्यगतिके अधिष्ठित होकर स्वामी हैं ऐसा कहना चाहिये । यह प्रथम सूत्रस्थित भेद है । यहां पूर्वोक्त प्रत्यय सम्बन्धी गतिगत स्वामित्वका भेद सब सूत्रोंमें देखना चाहियें । विशेष इतना है कि द्विस्थानिक प्रकृतियोंमें तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका बन्ध मनुष्यगतिमें परोदय होता है: परन्तु यहां इनका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, ऐसा कहना चाहिये । विशेषता यह है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, औदारिककाययोगमें उसके उदयका अभाव है । तिर्यग्गति और तिर्यगानुपूर्वीका मनुष्यगतिमें सान्तर बन्ध होता है, किन्तु यहां उनका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है । इसी प्रकार ही नीचगोत्रके भी कहना चाहिये । मनुष्यायु और मनुष्यगतिका मनुष्यगतिमें स्वोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोदय परोदय बन्ध होता है । औदारिकशरीरांगोपांग मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध मनुष्यगतिमें सान्तर-निरन्तर होता है, परन्तु यहां सान्तर होता है । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्य-गतिमें स्वोदय-परोदय बन्ध है, परन्तु यहां परोदय बन्ध होता हैं । औदारिक-शरीरका मनुष्यगतिमें स्वोदय-परोदय बन्ध है, परन्तु यहां स्वोदय बन्ध होता हैं । औदारिकशरीरका मनुष्यगतिमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, यहां भी सान्तर-निरन्तर >

ʿचेव । एसो वेट्ठाणियसुत्तट्ठियभेदो ʾ

ʿएइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहार-णाणं मणुसगईए परोदओ बंधो, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । अपज्जत्तस्स मणुसग-ईए सोदय परोदओ, एत्थ परोदओ । एसो एगट्ठाणियसुत्तट्ठियभेदो ʾ

ʿसंपधिय अण्णसुत्तेसु भेदाभावादो ताणि मोत्तूण अट्ठट्ठाणियसुत्तट्ठियभेदो उच्चदे-मिच्छादिट्ठि सासणसम्मादिट्ठि- असंजदसम्मादिट्ठीसु उवघाद-परघाद-उस्सास-पज्ज-त्ताणं मणुसगईए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण सोदओ चेव । पंचिंदियजादि-तस-बादराणं मणुसगईए सोदओ, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । जेणेदं देसामासियमप्पणा-सुत्तं तेणेदे सव्वविसेसा एत्थुवलब्भंति । अण्णं पि भेदसंदंसणट्ठमुवरिमसुत्तं भणदि-

ʿणवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो ।। १४३ ।ʾ

ʿओरालियकायजोगीसु अबन्धगाभावादो ʾ

ʿओरालियमिस्सकायजोगीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-

----

< ही होता है । यह द्विस्थानिक सूत्रस्थित भेद है । >

< एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका मनुष्यगतिमें परोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । अपर्याप्तका मनुष्यगतिमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां परोदय बन्ध होता हैं । यह एकस्थानिक सूत्रस्थित भेद है । >

< इस समय अन्य सूत्रोंमें भेद न होनेसे उन्हें छोडकर अष्टस्थानिक सूत्रस्थित भेदकों कहते है--मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उपघात, परघात, उच्छ्वास और पर्याप्तका मनुष्यगतिमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोदय ही बन्ध होता है । पंचेन्द्रिय जाति, त्रस और बादरका मनुष्यगतिमें स्वोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोदय-परोदय बन्ध होता हैं । चूंकि यह अपर्णासूत्र देशामर्शक है, अत एव ये सब विशेषतामें यहां पायी जाती हैं । अन्य भी भेद दिखलानेकेलिये उपरिम सूत्र कहते हैं- >

ʿविशेषता यह है कि साता वेदनीयकी प्ररुपणा मनोयोगियोंके समान हैं ।। १४३ ।ʾ

< क्योंकि, औदारिककाययोगियोंमें साता वेदनीयके अबन्धकोंका अभाव है । >

ʿऔदारिकमिश्रकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय बारह कषाय, पुरुषवेद हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस-

----

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

ʿदुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति अजसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ।। १४४ ।ʾ

ʿसुगमं ।ʾ

ʿमिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा अवसेसा अबंधा ।। १४५ ।ʾ

ʿपरघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणमेत्थुदयाभावादो बन्धोदयाणं पुव्वावर-कालसंबंधिवोच्छेदविचारो णत्थि । अवसेसाणं पयडीणं बन्धोदया समं वोच्छिज्जंति, असंजदसम्मादिट्ठिम्मि तदुभयाभावदंसणादो ।ʾ

ʿपंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गन्ध-रस-फास-अगुरुवल-हुअ-उवघाद-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो ।ʾ

ʿव कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयश:कीर्ति, निर्माण उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ।। १४४ ।ʾ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿमिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक है ?ʾ

< परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका यहां उदयाभाव होनेसे बन्ध व उदयके पूर्व और अपर काल सम्बधी व्युच्छेदका विचार नहीं । शेष प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । >

< पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ निर्माण और पांच अन्तराय-इनका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, बारह कषाय, >

जोगमग्गणाए बंधसामित्तं

ʻणिद्दा-पयला-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-असादावेदणीय-उच्चा-गोदाणं सोदय-परोदओ बन्धो । कधमुच्चागोदबन्धो सम्मादिट्ठीसु परोदओ ? ण, तिरिक्खेसु पुव्वाउवबन्धवसेणुप्पण्णखइयसम्मादिट्ठीसु परोदएणुच्चागोदस्स बन्धुवलं-भादो । पुरिसवेद-समचउरससंठाण--सुभगादेज्ज-जसकित्तीणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सोदय- परोदओ । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदओ । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय- परोदएण बन्धो । सासणसम्मादिट्ठि-असंजद-सम्मादिट्ठीसु सोदएण । परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ सुस्सराणं तिसु वि गुणट्ठाणेसु परोदएण बन्धो । अजसकित्तीए मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिसु सोदय-परोदएण बन्धो, असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदएण ।ʼ

ʻपंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गन्ध-रस-फास-अगुरुवलहुअ--उवघाद--णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बन्धो । असाद-हस्स-रदि---अरदि--सोग--जसकित्ति--- अजसकित्ति---थिराथिर--सुभासुभाणं सांतरो बन्धो, तिसु वि गुणट्ठाणेसु एगसमएण बन्धुवरमदंसणादो । पुरिसवेद-समचउरससंठाण-सुभगादेज्ज-उच्चागोद-पसत्थविहायʼ

< हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, असाता वेदनीय और उच्चगोत्रका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । >

ʻशंकाʼ< सम्यग्दृष्टियोंमें उच्चगोत्रका परोदय बन्ध कैसे होता है ? >

ʿसमाधान-< यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, पूर्वमें बांधी गई आयुबन्धके वशसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुए क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें परोदयसे उच्चगोत्रका बन्ध पाया जाता है ।>

< पुरुषवेद समचतुरस्रसंस्थान, सुभग, आदेय और यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासादन-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । औदारिक मिश्रकाययोगियोंका असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका स्वोदय बन्ध होता है । पंचेन्द्रिय जाति त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदयसे बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति, और सुस्वरका तीनों ही गुणस्थानोंमें परोदयसे बन्ध होता है । अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें परोदयसे बन्ध होता है ।>

< पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है । असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, स्थिर, अस्थिर, शुभ और अशुभका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तीनों ही गुणस्थानोंमें इनका एक समयसे बन्धविश्राम देखा जाता है । पुरुषवेद, समचतुरस्त्र-संस्थान, सुभग, आदेय, उच्चगोत्र, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका मिथ्यादृष्टि व >

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

ʿगइ-सुस्सराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो बन्धो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि णिरंतरो । पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-परघादुस्सासाणं मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो बन्धो । कधं णिरंतरो ? तिरिक्ख- मणुस्सुप्पण्णसणक्कुमारादिदेवाणं णेरइयाणं च णिरंतरबन्धुवलंभादो । सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो।ʾ

ʿमिच्छाइट्ठिस्स तेदालीस पच्चया, ओधपच्चएसु ओरालियमिस्सकायजोगवदि-रित्त बारसजोगाणपमभावादो । सासणस्स अट्ठतीस, असंजदसम्माइट्ठिस्स बत्तीस पच्चया; तेसिं चेव जोगाणमभावादो असंजदसम्मादिट्ठीसु त्थी- णवुंसयवेदेहि सह बारसजोगाभावादो । एदाओ सव्वपयडीओ असंजदसम्मादिट्ठिघो देवगइसंजुत्तं बन्धंति । मिच्छाइट्ठि- सासणसम्मादिट्ठिणो

उच्चागोदं मणुसगइसंजुत्तं, सेसाओ सव्वपयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बन्धंति । देव-णिरयगईओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो किण्ण बन्धंति ? ण, अपज्जत्तध्दाए तासिं बन्धाभावादो ।

< सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें निरन्तर बन्ध होता है । पंचेन्द्रिय जाति त्रस, बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, परघात और उच्छ्‌वासका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है । >

ʿशंका-< निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? >

ʿसमाधान-< क्योंकि, तिर्यंच व मनुष्योंमें उत्पन्न हुए सानत्कुमारादि देवों और नारकियोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है। >

< उक्त प्रकृतियोंका सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है । >

< मिथ्यादृष्टिके तेतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि ओघ प्रत्ययोंमेंसे उसके औदा-रिकमिश्र काययोगको छोडकर अन्य बारह योगोंका अभाव हैं । सासादनसम्यग्दृष्टिके अडतीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके बत्तीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उन्हीं योगोंका यहां भी अभाव है, चूंकि असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्त्री और नपुंसक वेदोंके साथ बारह योगोंका अभाव है । इन सब प्रकृतियोंको असंयतसम्यग्दृष्टि देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष सब प्रकृतियोंको तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । >

ʿशंका-< देवगति व नरकगतिको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि क्यों नहीं बांधते ? >

ʿसमाधान-< नहीं बांधते, क्योंकि, अपर्याप्त कालमें उनका बन्ध नहीं होता । >

जोगमग्गणाए बंधसामित्तं

ʿतिरिक्ख-मणुस्सा सामी । बन्धद्धाणं बन्धविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । पंचणाणावर-णीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-

णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बन्धो । सेसेसु तिविहो धुव-बंधाभावादो । अवसेसाणं सव्वपयडीणं तिसु वि गुणट्ठाणेसु बन्धो सादि-अध्दुवो ɺ

ʻणिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिध्दि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणु-पुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अण्णादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ।। १४६ ।ɺ

ʻसुगमं ɺ

ʻमिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।। १४७ ।ɺ

< तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं । बन्धावधन और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष दो गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता हैं,क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष सब प्रकृतियोंका बन्ध तीनों ही गुणस्थानोंमें सादि व अध्रुव होता है । >

ʻनिद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृध्दि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार संस्थान, औदारि-कशरीरांगोपांग, पांच संहनन, तिर्यग्गति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्र-शस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ।। १४६ ।ɺ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʻमिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ।। १४७ ।ɺ

ʻएदस्स अत्थो उच्चदे----अणंताणुबन्धिचउक्कि-त्थीवेद-चउसंठाण-पंचसंघडण-दुभग-अणादेज्जाणं बन्धोदया सासणसम्माइट्ठिम्हि समं वोच्छिज्जंति, ण मिच्छाइ-ट्ठिम्हि; अणुवलंभादो ।

अवसेसाणं पयडीणमेत्थुदयवोच्छेदो णत्थि, उवरि तदुव-लंभादो । केवलो एत्थ बन्धवोच्छेदो चेव, तद्दंसणादो ।

'थीणगिध्दितिय-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहाय-गइ-दुस्सराणं परोदओ बन्धो, अपज्जत्तएसु एदासिमुदयाभावादो । ओरालियसरीरस्स सोदओ बन्धो, एत्थ धुवोदयत्तादो । ओरालियसरीरअंगोवंगस्स मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बन्धो, सासणे सोदओ । अणंताणुबन्धिचउक्क-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-मणुस-गइ-चउसंठाण पंचसंघडण-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं दोसु वि गुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बन्धो, अध्दुवोदयत्तादो । थीणगिध्दितिय--अणंताणुबन्धिचउक्क--ओरा-लियसरीराणं णिरंतरो बन्धो, एत्थ धुवबन्धित्तादो । इत्थिवेद---चउसंठाण--पंचसंघडण--उज्जोव---अप्पसत्थविहायगइ--दुभग--दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरो बन्धो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं

< इस सूत्रका अर्थक कहते हैं--अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, चार संस्थान, पांच संहनन, दुर्भग और अनादेयका बन्ध व उदय दोनों सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें नहीं, क्योंकि, वहां इनका व्युच्छेद पाया नहीं जाता । औदारिकमिश्रकाययोगियोके शेष प्रकृतियोंका यहां उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर उनका उदय पाया जाता है । उनका यहां केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, वह यहां देखनेमें आता है । >

< स्त्यानगृद्धित्रय, तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्त-विहायोगति और दुस्वरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तोंमें इनके उदयका अभाव है । औदारिकशरीरका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां वह ध्रुवोदयी हैं । औदारिकशरीररांगोपांगका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, सासादनमें स्वोदय बन्ध होता है । अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति मनुष्यगति, चार संस्थान, पांच संहनन, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता हैं, क्योंकि, ये अध्रुवोदयी हैं । स्त्यानगृध्दित्रय, अनन्तानुबन्धि-चतुष्क और औदारिकशरीरका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवबन्धी हैं । स्त्रीवेद, चार संस्थान, पांच संहनन,

उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेयका सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध मिथ्यादृष्टि >

जोगमग्गणाए बंधसामित्तं

ʿमिच्छाइट्ठिम्हि बन्धो सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुढवीदो तिरिक्खेसुप्पण्णणेरइएसु च णिरंतरबन्धुवलंभादो । सासणसम्मादि-ट्ठिम्हि सांतरो, तत्थ तेसिमुववादाभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, आणदादिवेसु मणुसेसुप्पण्णेसु दुविहगुणेसु मुहुत्तस्संतो णिरंतरबन्धुवलंभादो । ओरालियसरीरअंगोवंगस्स मिच्छाइट्ठिम्हि बन्धो सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? ण, सणक्कुमारादिदेव णेरइएसु तिरिक्ख-मणुस्सु-प्पण्णेसु अंतोमुहुत्तं णिरंतरबन्धुवलंभादो । सासणसम्मादिट्ठिम्हि णिरंतरो ⁄।

ʿमिच्छाइट्ठिम्हि तेदालीस, सासणे अट्ठतीसुत्तरपच्चया । सेसं सुगमं । तिरि-क्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुव्वी-उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तं । मणुसगइपाओग्गाणु⁄

< गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर होता है । >

ʿशंका⁄< निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? >

ʿसमाधान⁄< यह ठीक नहीं है, क्योंकि, तेज व वायुकायिकोंमें तथा सातवीं पृथिवीसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । >

< सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उक्त जीवोंके उत्पादका अभाव है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है । >

ʿशंका⁄< निरन्तर बन्ध कैसे होता ? >

ʿसमाधान⁄< नहीं, क्योंकि, आनतादिक देवोंके मनुष्योंमें उत्पन्न होनेपर सूत्रोक्त दोनों गुणस्थानोंमें अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है । औदारिकशरीरांगोपांगका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर होता है । >

ʿशंका-< निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? >

ʿसमाधान-< यह ठीक नहीं, क्योंकि, सनत्कुमार आदिके देवोंके तथा नारकियोंके तिर्यंच व मनुष्योंमें उत्पन्न होनेपर अन्तर्मुहूर्त तक उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।>

< सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकशरीर आंगोपांगका निरन्तर बन्ध होता है । >

< मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें तेतालीस और सासादन गुणस्थानमें अडतीस उत्तर प्रत्यय होते है । शेष प्रत्ययप्ररुपणा सुगम है । तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसे संयुक्त, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसे संयुक्त होकर >